अध्याय - द्वितीय
संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका

साहित्य का "पुनरावलोकन" प्रत्येक वैज्ञनिक अनुसधान की प्रक्रिया मे एक महत्वपूर्ण कदम है । साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है । समस्या से सबधित साहित्य का पुनरावलोन अनुसधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण मे एक महत्वपूर्ण कारक है ।

साहित्य के पुनरावलोकन से निम्न लाभ होते है –

1 सर्वेक्षण न करने से जो अनुसधान कार्य पहले अन्य अनुसधान कर्ता द्वारा अच्छी प्रकार किया जा चुका है, वह पुन किया जा सकता है ।

2 ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहा पर है वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढाया जा सकता है ।

3 पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसधानकर्ता को अपने अनुसधान के विधान की रचना के सबध मे अर्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है ।

4 पूर्व अनुसधानो के अध्ययन से अन्य सबधित नवीन समस्याओ का पता लगता

5 सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसधानो को नवीन दशाओ मे करने की आवश्यकता होती है ।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसधान मे बहुत महत्व है । प्रस्तुत समस्या से सबधित साहित्य का पुनरावलोकन इस प्रकार है –

2.1 पूर्व शोध आकलन :

शोध की वर्तमान स्थिति जानने के लिये शोधकर्ता ने भारत मे प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण से सबधित पी एच डी स्तर के शोध का आकलन किया । इस अध्ययन के लिए एम बी बुच द्वारा सम्पादित "भारत मे शैक्षिक शोध का सर्वेक्षण" के चतुर्थ (1988) अक के भाग – 2 का अध्ययन किया गया ।

1 पी एन दवे और सहयोगी (1988) ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् के डिपार्टमेट ऑफ प्री स्कूल एण्ड एलीमेंट्री एज्यूकेशन के अतर्गत यूनिसेफ के सहयोग से अरूणाचल प्रदेश को छोडकर सभी राज्यो एव केन्द्र शासित क्षेत्रो के 2480 स्कूलो मे प्राथमिक स्तर पर छात्रो की उपलब्धि का अध्ययन किया । उन्होने अपने अध्ययन मे पाया कि कक्षा 1 व 2 मे गणित विषय मे उपलब्धि का स्तर कक्षा 3 की अपेक्षा अधिक अच्छा है, लेकिन कक्षा 4 मे यह स्तर से कम है तथा ये उपलब्धियाँ विभिन्न राज्यो तथा केन्द्र शासित क्षेत्रो मे भिन्न भिन है ।

2 राजपूत ने (1984) "कक्षा 5 के छात्रो के गणित विषय मे उपलब्धि पर बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव" का अध्ययन किया । उनके अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य कक्षा 5 मे गणित विषय का मानकीकृत परीक्षण तैयार करना । बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण के विभिन्नता तथा सामाजिक आर्थिक स्थिति के छात्रो के गणित विषय मे उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है ।

LIBRARY Bhopal

सर्वप्रथम 1000 छात्रो के प्रतिदर्श (न्याय दर्श) पर गणित विषय का एक मानकीकृत परीक्षण तैयार किया गया । 435 छात्र छात्राओ पर विभिनन परीक्षण किये गये तथा अत मे 270 विद्यार्थियो को अतिम न्यादश मे शामिल किया गया । इस समूचे अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न है –

1 सभी स्तरो पर गणित विषय मे उपलब्धि पर बुद्धि का सार्थक प्रभाव पाया गया ।

2 सामान्य कक्षा परिस्थितियो मे उपलब्धि अभिप्रेरणा का गणित विषय मे उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

3 सामाजिक आर्थिक स्तर का छात्रो की उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया ।

3 अग्रवाल ने (1982) कक्षा 10 एव 12 के विज्ञान एव मानविकी विषय की 550 छात्राओ पर "दो समूहो जिनकी बुद्धि लब्धि लगभग बराबर थी किंतु उपलब्धि मे अतर था" पर विभिन्न कारको के प्रभाव का अध्ययन किया । इस अध्ययन के उद्देश्य रूचि, बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर उपलब्धि से सबध ज्ञात करना । बुद्धि लब्धि को स्थिर रखते हुये अभिरूचि, समायोजन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का उपलब्धि पर पडने वाला प्रभाव ज्ञात करना , कि स्वतत्र चरो तथा परतत्र चरो के बीच कोई सार्थक अतर नही है । अध्ययन के उपरात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कक्षा 10 और 12 वी की विज्ञान छात्राओ की उपलब्धि पर अभिरूचि, समायोजन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का स्पष्ट प्रभाव देखा गया

4 चक्रवर्ती (1988) ने पूना तथा इसके आसपास के 12 ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयो मे कक्षा 5 के 500 छात्र छात्राओ पर "बुद्धि परिवार की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि तथा परिवार मे शैक्षणिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया ।" इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य परिवार के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि तथा मानसिक योग्यता का बुद्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था ।

अध्ययन के उपरात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1 शहरी क्षेत्र के छात्रो का ग्रामीण छात्रो की अपेक्षा उपलब्धि सार्थक रूप से उत्तम रही ।

2 निजी विद्यालय के छात्रो की उपलब्धि जिला पचायत तथा निगम विद्यालयो से अच्छी पाई गयी ।

3 मराठी (MARATHI) माध्यम विद्यालय के छात्रो की उपलब्धि अग्रेजी माध्यम विद्यालय के छात्रो से अच्छी पाई गई ।

4 छात्र एव छात्राओ की उपलब्धि मे कोई सार्थक अतर नही पाया गया ।

5 एस देशपाण्डे ने सन् 1986 मे हाई स्कूल के 382 विद्यार्थियो पर बुद्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का छात्रो के गृहकार्य तथा उपलब्धि पर अन्योन्य प्रभाव का अध्ययन किया इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है –

1 उच्च, मध्यम तथा निम्न बुद्धि वाले छात्रो की उपलब्धि पर एक साथ बहुतसा गृहकार्य तथा थोडा थोडा गृहकार्य एव तुरत मूल्याकन और विलब से मूल्याकन के प्रभाव का पता लगाना ।

2 विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रो उच्च, मध्यम तथा निम्न बुद्धि के आधार पर गृहकार्य का उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव को ज्ञात करना ।

अध्ययन के उपरात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1 गृहकार्य की मात्रा तथा मूल्याकन मे होने वाली देरी काउपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव मे कोई सार्थक अतर नही है ।

2 10% तथा 1% सार्थकता स्तर पर बुद्धि का उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव

3 उपलब्धि तथा गृहकार्य के सबध का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जिन छात्रो को गृहकार्य दिया जाता है उनकी उपलब्धि अच्छी होती है ।

6 जेड एन ने (1984) ए स्टडी ऑफ क्लासरूप क्लाइमेट एड द साइन्कि ऑफ प्यूपिल्स एण्ड देयर एचीवमेट

उद्देश्य :

1 कक्षाओ मे पर्यावरण तथा साइ–कि स्कोर का पता लगाना ।

2 कक्षा के उच्च एव निम्न कक्षा पर्यावरण की प्रोफाईल का अध्ययन करना ।

3 उच्च तथा निम्न कक्षा पर्यावरण वाले कक्षाओ के मास्टर प्रोफाईल की तुलना करना ।

अध्ययन के लिये वालसद ओर सूरत जिलो की उच्चतर विद्यालयो की 1279 बच्चो को लिया गया ।

निष्कर्ष

1 अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कक्षा पर्यावरण का छात्रो की उपलब्धि से सहसबध है ।

2 छात्रो की उपलब्धि शिक्षको के व्यवहार कक्षा पर्यावरण ओर प्यूपिल्स साइ–कि पर निर्भर करती है ।

2.2 एन.सी.ई.आर.टी. के प्रयास

1978 मे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान व प्रशिक्षण परिषद मे न्यूनतम अधिगम स्तरो के विशिष्टीकरण की दिशा मे पहले ही महत्वपूर्ण प्रयास किए जा चुके थे जो कि यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजना प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्चा नवीनकरण तथा सामुदायिक शिक्षा एव सहभागिता मे विकासात्मक कार्यकलाप के साथ जुडे थे । इन परियोजना के अतर्गत कक्षा

2,3,4 व 5 के सभी बच्चो द्वारा अपेक्षित सप्राप्ति हेतु अधिगम प्रतिफलो का सूचक एक न्यूनतम अधिगम सातत्यक (कटीनुअम) तैयार किया गया था । 1984 मे प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्चा नवीनीकरण परियोजना का मूल्याकन न्यूनतम अधिगम सातल्यक मे विनिर्दिष्ट दक्षताओ के आधार पर सभी प्राथमिक कक्षाओ के लिए तैयार किए गये सप्राप्ति परीक्षण की सहायता से किया गया था राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की रिपोर्ट मे शिक्षा सबधी सभी समस्याओ के अतिरिक्त शिक्षाविदो का ध्यानाकर्षण गुणवत्ता की ओर रहा है । गुणवत्ता सबधी असगत स्थिति के सुधार हेतु 1986 की शिक्षा नीति मे विद्यालय की न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओ की सपूर्ति एव न्यूनतम अधिगम स्तरो के निर्धारण की बात कही गई है जिसकी सप्राप्ति सभी छात्रो के लिए आवश्यक है ।

2.3 न्यूनतम अधिगम स्तर समिति के प्रयास :

आठवी पचवर्षीय योजना तैयार करने के लिए गठित प्रारभिक बाल्यावस्था और प्राथमिक शिक्षा की कार्यदल की रिपोर्ट मे इस नीति निर्देश को ध्यान मे रखते हुए कहा गया है कि लक्ष्यो का निर्धारण केवल सहभागिता की दृष्टि से ही नही अपितु गुणवत्ता व प्रतिफलो की दृष्टि से भी किये जाने की आवश्यकता है । गुणवत्ता एव परिमाण से यथेष्ट सुधार को ध्यान मे रखते हुऐ भारत सरकार के मानव ससाधन मत्रालय के शिक्षा विभाग मे 5 जनवरी 1990 के आदेश क्रमाक सस्था–74/3/89–डस्क(टी ई) द्वारा पश्चिमी जर्मनी के डॉ दवे की अध्यक्षता मे 11 सदस्यीय न्यूनतम अधिगम स्तर समिति का गठन किया । इस समिति के विचारार्थ विषय निम्नलिखित थे –

1 कक्षा 3री तथा 5वी के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर का निर्धारण ।

2 शिक्षार्थी के व्यापक मूल्याकन व जाचो की पद्धतियो की सिफारिश ।

3 अधिगम के असज्ञानात्मक क्षेत्रो पर विचार तथा ऐसे नए सुझाव जिनके आधार पर इन क्षेत्रो मे अध्यापन मे सुधार लाया जा सके ।

समिति ने इस क्षेत्र मे लगातार विभिन्न राज्यो मे अनेक स्वैच्छिक सस्थाओ,

प्राथमिक शिक्षको व अनौपचारिक शिक्षा अनुदेशको से मत्रणा व सहायता ली । फलस्वरूप समिति ने अपनी रिपोर्ट फरवरी 1991 मे प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर प्रकाशित कर दी ।

2.4 यशपाल समिति रिपोर्ट (पलाश, नवंबर 1993)

स्कूली छात्रो पर से बस्ते का बोझ कम करने ओर सीखने की गुणवत्ता को बढाने के लिए भारत सरकार के मानव ससाधन विकास मत्रालय ने मार्च 1992 मे एक राष्ट्रीय सलाहकार समिति गठित की गई । जिसके अध्यक्ष प्रो यशपाल थे इसके अतिरिक्त समिति में छ सदस्य भी थे । समिति ने बस्ते को बोझ व गुणवत्ता को लेकर विभिन्न शिक्षको, पाठ्यक्रम निर्माताओ, पाठ्यपुस्तको लेखको, विभिन्न शिक्षा मण्डलो, वैज्ञानिको, शिक्षाविदो, पुस्तक प्रकाशको, हेडमास्टरो तथा प्राचार्यो व अनेक लोगो से चर्चा कर रिपोर्ट तैयार की । यशपाल समिति ने बालक के विकास मे बस्ते के बोझ को बाधा माना है यह बोझ पाठ्यक्रम के बोझ मे ज्ञान के विस्फोट के सदर्भ मे देखा गया है यह ज्ञान के विस्फोट की अवधारणा बच्चे के सज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक विकास मे भी बाधक है । यशपाल समिति की रिपोर्ट मे कुछ ऐसे प्रश्न उठते है जो कि यथार्थ है ।

1 क्या जो न्यूनतम अधिगम स्तर राष्ट्रीय स्तर पर तय किऐ गये है वे बच्चो को बोझमुक्त जानकारी दबाव से मुक्त ओर रटने एव रटा हुआ परीक्षा मे उगल देने की प्रवृत्ति से मुक्त है ।

2 न्यूनतम अधिगम स्तर स्वय बोझिल नही है और वे भी दक्षताओ के सहज विकास मे बाधक नही है ।

3 क्या ऐसा नही लगता कि एम एल एल निर्धारण की प्रक्रिया प्रौढ़ शिक्षा विदो ने अपने अनुमानो और ज्ञान के विस्फोट की अवधारण के आधार पर की है ।

4 क्या प्रशिक्षण (अल्प या दीर्घकालीन) के देने से एम एल एल आधारित दक्षता हासिल करने मे शिक्षक सक्षम हो जाऐगे ।

5 क्या एम एल एल न्यूनतम मानवीय और भौतिक ससाधनो को ध्यान मे रखकर रचे गये है ।

इस तरह से अनेक ऐसे प्रश्न है जिनके कारण खोजना होगे । यशपाल समिति ने गुणवत्ता और बस्ते के बोझ के लिए कई कारण बताऐ है जैसे – नीरस शिक्षा, दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, पाठ्यपुस्तक, दोषपूर्ण पाठ्यक्रम की सरचना आदि अनेक कारक है । समिति मे इन सब बातो पर विस्तृत दृष्टि से विचार कर कुछ सुझाव भी बताऐ गऐ है जैसे – प्राथमिक स्तर तक केवल मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम होना चाहिए स्कूलो मे सामूहिक क्रियाकलाप तथा सामूहिक सफलता को प्रोत्साहित ओर पुरस्कृत किया जाना चाहिए पाठ्यपुस्तको की लेखन प्रक्रिया मे बदलाव आना चाहिए, गैर सरकारी स्कूलो को मान्यता प्रदान करने के लिए मानदण्ड अधिक कठोर बनाए जाना चाहिए । शिक्षको की सतत् शिक्षा को सस्थागत बना देना चाहिए । "शिक्षा दर्शन" के नाम से टी व्ही पर एक कार्यक्रम का प्रसारण हो जिला ब्लॉक व गाव के स्तर पर समितियॉ स्थापित की जावे जो अपने अधिकाश क्षेत्र मे आने वाले स्कूलो के लिए योजना निर्माण व उनका पर्यवेक्षण करे । अनेक सुझाव यशपाल समिति ने शिक्षा गुणवत्ता को बढाने हेतु दिऐ ।

2.5 एम.एल.एल.पर संस्कार शिक्षा समिति प्रतिवेदन (1993) :

सस्कार शिक्षा समिति भोपाल के अतर्गत प्रो एस एन त्रिपाठी ने भोपाल की शालाओ के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर परियोजना नामक प्रोजेक्ट चलाया । इस परियोजना मई 1991 मे स्वीकृति मिली ओर इसी माह से परियोजना का कार्य शुरू कर दिया गया । परियोजना मे 1991–92 मे कुल बीस प्राथमिक शालाओ का चयन किया गया जिसमे 18 सरकारी व 2 प्रायवेट शालाऐ थी इनमे से 10 शहरी व 10 ग्रामीण क्षेत्र की है जो भोपाल के आसपास क्षेत्र मे स्थित है बाद मे 5 शहरी शालाऐ और शामिल की गई इन शालाओ मे कुल 284 शिक्षक व 10 हजार 325 विद्यार्थी कक्षा 1 से 5 तक के थे । शहरी शालाओ की प्रत्येक कक्षा मे पाया गया कि प्रत्येक कक्षा के 2 या अधिक वर्ग है जिनमे बडी सख्या मे छात्र दर्ज है अधिकाश छात्र कमजोर सामाजिक आर्थिक स्थिति के है । परियोजना मे गुणवत्ता निवेश के सप्राप्ति हेतु पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध परीक्षा के प्रारूप को अपनाया गया

दक्षता आधारित मूल्याकन व शिक्षण को प्राथमिकता दी गई, इसमे उपचारात्मक शिक्षण व कई प्रभावशाली शिक्षण विधियो का उपयेाग किया गया ।

2.6 कार्यक्रम की रूपरेखा प्रशिक्षण

1991–92 मे चार कार्यशालाऐ प्रतिदिन की अवधि मे आयोजित की गई एक कार्यशाला मे सस्था प्रमुखो व निरीक्षको व अन्य तीन मे भाषा व पर्यावरणीय अध्ययन का शिक्षण दिया गया ।

1992–93 मे तीन कार्यशालाऐ भाषा, गणित व पर्यावरणीय अध्ययन के शिक्षण के लिए आयोजित की गई । इन कार्यशालाओ मे पाठो का प्रदर्शन व विधियो पर चर्चा हुई, शिक्षको की मीटिग बुलाई गई व शिक्षण विधियो पर चर्चा की गई ।

पढने व लिखने के कौशल पर विशेष ध्यान दिया गया । कक्षा 3 के तीन छात्र जो पढाई मे कमजोर थे, उन्हे अगस्त से अक्टूबर 93, 3 महीने तक उनकी पढाई का विश्लेषण किया गया । उन्हे ठीक से अक्षर ज्ञान तक नही था । शिक्षक ने उन्हे समूह शिक्षण कराया किंतु फिर भी कोई वृद्धि न हो सकी । उनके पढने का स्तर कक्षा 1 का था, जब कि ये कक्षा 3 के छात्र थे । इससे यह पाया गया कि बिना पढने के कौशल को सीखे छात्र कक्षा 3 तक पहुँच जाते हे । यह भी पाया गया कि इन शालाओ मे 10 से 30% प्रत्येक शाला के कक्षा 5 के छात्र बिना सीखे नही पढ सकते । उन्हे फ्लेश कार्ड के माध्यम से पढना सिखाया गया ।

परियोजना प्रशासित इन शालाओ मे से एक शाला मे कक्षा 5 पिछड़े बालको के लिये लेखन शिक्षण भी आयोजित कराया गया । कक्षा 5 के 40 छात्रो पर 11 अक्टूबर 93 को परीक्षण लिया गया । दूसरा टेस्ट 2 नवम्बर व 27 नवम्बर को अतिम परीक्षण लिया

गया । पहले परीक्षण का माध्य 52 मे से 23 व अतिम परीक्षण का माध्य 27 आया, जो पिछढे बालको की कौशल वृद्धि को दिखाता है । 1993 मे कक्षा 2 से 5 तक के 500 छात्रो पर 20 प्राप्ताको का स्क्रीनिग परीक्षण भी किया गया, जो भाषा व गणित की दक्षताओ पर आधारित है ।

सीखने सिखाने के विकास हेतु कुछ सामग्री शिक्षको को वितरित की गई । जैसे – दक्षता आधारित पाठ्य योजना, गणित शिक्षण सुझाव पुस्तिका व दक्षता आधारित प्रश्न, गणित की त्रुटिविश्लेषण व प्रश्नो की कठिनाई स्तर ज्ञात करना व सुझाव ।

2.7 पाठ्यक्रम पुनरीक्षण कार्यशाला प्रतिवेदन (एन.सी.ई आर.टी. अगस्त 1993) .

विभिन्न उद्देश्यो को लेकर पाठ्यक्रमो मे सशोधन की आवश्यकता का अनुभव किया जाता रहा है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, समीक्षा समिति 1990, जनार्दन रेड्डी समिति व यशपाल समिति 1992 मे भी प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम व उपलब्धि स्तर पर बल देकर शिक्षा मे गुणवत्ता की बात कही है । पाठ्यक्रम मे सशोधन व पुनरीक्षण की आवश्यकता को लेकर तीन दिवसीय (25 से 27 अगस्त 1993) पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन एन सी ई आर टी भोपाल मे किया गया । इस कार्यशाला के आयोजन मे मध्य प्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद लोक शिक्षण सचालनालय एव यूनीसेफ भोपाल की विशेष भूमिका रही । कार्यशाला 3 दिन चली, जिसमे विभिन्न शिक्षा सस्थाओ के 88 सदस्यो ने भाग लिया । इस कार्यशाला के निम्न उद्देश्य थे –

1 प्रचलित पाठ्यक्रम की वर्तामान सदर्भ मे उपयोगिता का आकलन ।

2 सशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्य योजना 1992 के आधार पर प्रचलित पाठ्यक्रम का मूल्याकन ।

3 राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित न्यूनतम अधिगम स्तर, बाल केन्द्रीयता और परिवेश आधारित शिक्षा के सदर्भ मे वर्तामान पाठ्यक्रम का औचित्य एव सशोधन की आवश्यकता ।

4 प्राथमिक स्तर पर मूल्याकन प्रणाली के औचित्य उपर्युक्त और परिवर्तन की सभावना की जाच करना ।

5 भावी पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री की प्रारूपो की सामान्य रूपरेखा व प्रक्रिया तय करना ।

2.8 न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यशाला (पलाश, अक्टूबर 1990 से) :

वास्तव मे एक बच्चा क्या और कितना सीखे और एक शिक्षक क्या ओर कितना पढा पाने या सिखा पाने की क्षमता रखता है, इसका सही मूल्याकन हुआ ही नही । कभी कक्षा 1–2 मे परीक्षा के पक्ष मे तो कभी विरोध मे लोग अपने अपने ढग से राय देते है । शून्य उपलब्धि के साथ भी यदि बालक कक्षागत परीक्षा पास कर लेता है तो परीक्षा को ही उपलब्धि मान लिया जाता है, बालक के सीखे हुये ज्ञान और व्यवहार को नही, बालक और शिक्षक की क्षमता व योग्यता को नही ।

*

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal